SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

जनसंचार और जगरूकता

प्राची अनर्थ, शिवासंतोषी सोनी, शिक्षा विभाग
पं हरिशंकर शुक्ला स्मृति महाविद्यालय, कचना, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
प्राची अनर्थ
शिवासंतोषी सोनी

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 08/09/2023
Revised on : -----
Accepted on : 15/09/2023
Plagiarism : 08% on 08/09/2023

Plagiarism Checker X - Report
Originality Assessment
Overall Similarity: **8%**
Date: Sep 8, 2023
Statistics: 238 words Plagiarized / 3158 Total words
Remarks: Low similarity detected, check with your supervisor if changes are required.

शोध सार

वर्तमान युग में परिवर्तन का दौर चला आ रहा है और इस परिवर्तन ने दुनिया को कल्पनातीत ढ़ंग से बदल दिया है। दुनिया में आदिम युग से कृषि युग और कृषि युग के पश्चात् औद्योगिक युग में प्रवेश किया, लेकिन इस परिवर्तन के युग ने एक शताब्दी से भी कम समय में दुनिया को औद्योगिक युग से पीछे छोड़कर सूचना के युग में लाकर खड़ा कर दिया है। इस दौरान दुनिया में समाज का एक हिस्सा समृद्धि की सीढ़ी चढ़ गया, किंतु दुसरा हिस्सा गरीबी रेखा ने नीचे बना रहा। तेजी से बढ़ती आबादी, नगरीकरण, औद्योगिकीकरण, वैज्ञानिक तकनीकि ज्ञान के विस्फोट शिक्षा के प्रसार के साथ–साथ समाज में परिवर्तन आ गया। समाज का एक पुर्जा दूसरे के लिए ज्यादा उत्तरदायी हो गया। इन सभी बातों में जनमत को अंतिम प्रभावकारी कारक बना दिया। जनमत की शक्ति व प्रभाव बढ़ने से अब जनसंचार एक महत्वपूर्ण विषय बन गया। "व्यक्ति स्वयं बनता व बनाता है" इस कथन के आधार पर जनसंचार के वर्तमान स्वरूप को समझना व जनसंचार से जुड़े समस्त क्रियाकलापों के प्रति लोगों की जागरूकता को बढ़ना अत्यंत आवश्यक हो गया है।

मुख्य शब्द

जनसुचना, जागरण, शिक्षा, औद्योगिकीकरण.

प्रस्तावना

संचार का असीम महत्व समस्त प्राणी जगत के लिए है। इस का स्वरूप हर काल, स्थान, परिस्थिति व समूल के लिए अलग हो सकता है, लेकिन इसके व्यापक तथा निरंतर बढ़ते महत्व से कोई इंकार नही कर सकता। संचार के प्रारंभिक रूपों की चाहें जितनी भी सीमांए क्यों ना रही हों, आधुनिक समाज व मानव विकास के साथ संचार का अन्योन्याश्रम संबंध रहा है। खास तौर पर

कम्प्युटर तकनीक, इंटरनेट, उपग्रह संचार के क्षेत्र में अभूतपूर्व क्रांति ला दी है। महज दो दशकों के भीतर जनसंचार से जुड़े समस्त क्रियाकलापों व उसके स्वरूप पर इसका जबरदस्त असर पड़ा है।

महज दो दशकों में संचार के साधनों में इतना बदलाव आया कि इन उपलब्धियों को चमत्कार ही कहा जायेगा। दुनिया भर में जनसंचार हेतु हमारी पीढ़ी ने जब मीड़िया जग में कदम रखें तो जेराक्स, फैक्स मशीनें, कम्प्युटर, और स्केनर जैसी नयी चीजें कौतहल का विषय बन गई। आज मोबाइल, डिजिटल कैमरे, लैपटाप, इंटरनेट इत्यादि ने त्वरित सूचना संकलन व उसे जनमानस तक पहुंचाने के व्यापक विकल्प प्रस्तुत किये, दूसरी ओर उस वक्त जहां एकमात्र चैनल दूरदर्शन द्वारा प्रसारित समाचारों का प्रसारण देशभर से उत्सुकता का विषय बना हुआ करता था, वहीं आज दिनभर दर्जनों खबरिया चौनलों से समाचारों का प्रसारण हो रहा हैं। स्पष्ट है कि जनसंचार के क्षेत्र में आ रही नयी पीढ़ी के लिए संसाधन एवं अवसर ज्यादा है तो चुनौतियों व प्रतियोगिता भी उतनी ही ज्यादा है।

संचार की भूमिका

संचार हर प्राणी की बुनियादी व स्वाभाविक प्रकृति एवं जरूरत है। इसके जरिये हम अपनी जानकारियों, भावनाओं विचारों वगैरह का आदान–प्रदान करते है। इसमें भाषा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

संचार में ध्वनियों, भाषा एवं चित्रों का काफी महत्व रहा है। आदिम काल से ही मनुष्य ने इनका भिन्न–भिन्न रूपों में प्रयोग किया है। पशुओं के लिए संचार का प्रमुख जरिया ध्वनि एवं संकेत हैं, लेकिन मनुष्य ने बेहद प्रारंभ से ही संचार के नये–नये साधनों की तालाश की, जो आज भी जारी है। वर्तमान दौर के अत्याधुनिक संचार माध्यमों का विकासक्रम आदिमानव की उस जद्दोजेहाद का परिणाम हैं, जिसके तहत उसने सूचनाओं, भावनाओं और विचारों के संप्रेषण का हरसंभव उपाय ढूंढ़ना प्रारंभ किया था। इसकी शुरूआत एक–दूसरे को आवश्यक सूचनाएं देने के लिए शारीरिक संकेतों के अलावा विभिन्न प्रकार की ध्वनियों के माध्यम से हुई। ऐसी हरेक ध्वनि के साथ कुछ खास अर्थ जुड़ते चले गये। इस क्रम में मौखिक भाषा का विकास हुआ। दुनिया के विभिन्न कोने में मौजूद लोगों ने अपने–अपने ढंग से अलग–अलग ध्वनियों के अपने–अपने अर्थ निकाले, यही कारण है कि इतनी सारी भाषाएं बनी।

आपसी बोलचाल द्वारा संचार तथा श्रव्य–दृश्य माध्यमों द्वारा जनसंचार के रूप में आज वह प्रक्रिया काफी उन्नत रूप में देखी जा सकती है।

लिखित भाषा का विकास चित्राक्षरों से हुआ है। आदि मानव ने विभिन्न सूचनाओं व जानकारियों को विभिन्न प्रकार कि चित्रों के माध्यम से प्रकट करना प्रारंभ किया।

संचार संबंधित शोध

संचार–शोध का इतिहास ज्यादा पुराना नहीं हैं। अन्य समाज– विज्ञानों की अपेक्षा यह सर्वाधिक नया क्षेत्र है। जनसंचार संबंधी कई महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकलने के कारण संचार–शोध के प्रति दिलचस्पी बढ़ती गया।

1857 में अर्थशास्त्री कार्ल नाइट ने बताया कि टेलिग्राफ के आविष्कार ने सूचना के अर्थशास्त्र को किस तरह प्रभावित किया। उन्होंने बताया कि संपादक के पास एजेंडा निर्माण की ताकत होती है।

1910 में समाजशास्त्री मैक्स वेबर ने जर्मन सोशियोलोजिकल एसोसिएशन की पहली बैठक में अखबारों के कटेंट्स एनालिसिस पर जोर दिया। अखबारों में क्या चीजें छपती है, उनका लोगों के विचारों एवं मनोवैज्ञानिक पर क्या असंर होता है तथा इन परिर्वतनों के कौन–से सामाजिक–वैचारिक कारण है, इसका पता लगाने की सलाह दी।

प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान सर्वेक्षणों के द्वारा यह पता लगाने का प्रयास किया कि अंतरवैयक्तिक संचार समूह–संचार तथा जनसंचार के प्रभाव में कितना अंतर है।

बीसवीं सदी के प्रारंभ में जनसंचार के संबंध मं बुलैट थ्योरी हावी थी, यानि आपने किसी भी माध्यम के द्वारा अपनी बात प्रेषित कर दी और वह लोगों तक पहुंच जाये, तो प्राप्तकर्ता आपकी बात समझ जायेगा।

संचार का अभिप्राय

सूचना विचारों तथा अभिवृत्तियों को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक संप्रेषित करने की कला ही संचार है। संचार का सामान्य अभिप्राय लोगों का आपस में विचार, आचार, ज्ञान तथा भावनाओं का कुछ सकेतो द्वारा आदान–प्रदान है। संचार क्या है? कैसे होता है? किससे होता है? किन माध्यमों से होता है? उनका क्या प्रभाव होता है? इन सवालों के जवाब संचार–प्रक्रिया तथा प्रभाव को समझने में मदद करते है।

संचार की मुख्य क्रिया है मानव –व्यवहार पर असर डालना इसलिए व्यवहार में परिवर्तन के रूप में भेद व प्रक्रिया समझना जरूरी है। व्यक्तिगत स्तर पर हमें मालूम होना चाहिए कि लोग संदेश की अनुभूति कैसे करते हैं, तथा उसे ग्रहण करने के लिए किस प्रकार राजी होते है। समाज का हर व्यक्ति अंतर वैयक्ति संचार समूह–संचार या जनसंचार–माध्यम से सूचना तथा जानकारी प्राप्त करता है इसलिए सभी प्रकार के संचार माध्यमों की विशेषताओं तथा प्रभाव के बारे में माध्यम की विशेषताओं तथा प्रभाव के बारे में अध्ययन आवश्यक है। मनुष्यों में संचार करने की व्यापक क्षमता है, लेकिन समित स्तर पर। यही कारण है कि मनुष्य ने सभ्य समाज का निर्माण किया जैसे–जैसे संचार के माध्यमों का विकास हुआ, मनुष्यों की की संचार की क्षमता लगातार बढ़ती गयी। पहले संकेत और मौखिक संचार संभव था, लेकिन लिखित भाषा आने के बाद मनुष्य में संचार की क्षमता बढ़ी। आज इसके नये–नये आयास देखे जा सकते है। मुख्यतः दो चीजे संचार को संभव बनाती हैः–

1. संचार करने की मुनष्य की क्षमता।
2. संचार के साधन।

संचार की परिभाषा

Communication शब्द लैटिन भाषा के Communis से बना है। इसका अर्थ है– To Share to impart यानी आपस में बांटना या देना। इसका एक अर्थ to transit भी होता है, यानी एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजना। संचार पर विभिन्न विधाओं के विद्वानों ने काम किया, किंतु कोई सर्वसम्मत धारणा नहीं बन पायी।

ऑक्सफर्ड डिक्शनरी में संचार की परिभाषा एक विचार को दूसरे तक स्थानांतरित करने की धारणा पर आधारित है–

"विचारों जानकारी वगैरह का विनियम, किसी और तक पहुंचाना या बांटना चाहे वह लिखित, मौखित या सांकेतिक हो।"

विलबर श्राम–संचार शब्द लैटिन भाषा के Communis से आया है जिसका अर्थ है सामान्य। जब हम संचार करते है तो हमारी कोशिश किसी सूचना, विचार या अभिवृत्तियों को आपस में बांटने की होती है।

लुईस ए. एलेन–संचार उन सभी क्रियाओं का योग है जिनके द्वारा एक व्यक्ति दूसरे के साथ समझदारी स्थापित करना चाहता है। संचार अर्थों का एक पुल हैं। इसमें कहने, सुनने और समझने की एक व्यवस्थित तथा नियमित प्रक्रिया शामिल है।

संचार के महत्व एवं कार्य

संचार का हमारे जीवन में असीम महत्व है। इसके कार्यों की कुछ विद्वानों ने लंबी सूची बनायी है तो कुछ ने बेहद सारपूर्ण व संक्षिप्त सूची निम्नानुसार हैः

1. सूचना व जानकारी देना
2. समाजीकरण
3. प्रेरणा
4. वाद–विवाद और परिचर्चा
5. शिक्षा
6. सांस्कृतिक विकास
7. मनोरंजन
8. एकीकरण
9. राजनीति संबंधी कार्य
10. विकास संबंधी कार्य

संचार के प्रकार एवं तत्व

संचार की प्रक्रिया में शामिल लोगो, यानी संख्यात्मक लिहाज से प्रारंभ के तीन प्रकार माने जाते थेः

1. अंतरा–वैयक्तिक, 2. अंतरवैयक्तिक तथा 3. जनसंचार।

अंतरा–वैयक्तिक संचार (Intra-Personal Communication)

यह मनुष्य का व्यक्तिगत चिंतन–मनन हैं। यह स्वयं मनुष्य के भीतर का संचार है। यह मनुष्य की भावना, स्मरण, चिंतन या उलझन के रूप मे हो सकता है। मनोविज्ञान तथा मेडिकल साइंस के इस पर पर्याप्त अध्ययन हुए है। वस्तुतः सभी प्रकार के संचार में अंतरा–व्यक्तिक संचार की भूमिका होती है। मनुष्य के मस्तिष्क का संबंध शरीर के समस्त अंगों से है। ज्ञानेद्रियों के जरिये वह उनसे संचार में अंतरा–वैयक्तिक संचार की भूमिका होती है। मनुष्य की मस्तिष्क का संबंध शरीर के समस्त अंगों से है। ज्ञानेंद्रियों के जरिये वह उनसे संचार कर रहा होता है। मस्तिष्क न सिर्फ अन्य अंगों से बहुतेरे संदेश ग्रहण करता है, बल्कि उन्हें संदेश प्रेषित भी करता है। चाहे वह नाक, आंख, कान, जीभ, उंगली, त्वचा जिस पर चीज से हो। इस तरह मस्तिष्क संचारकर्ता का काम करता है। यहां तक कहा जाता हैं कि यदि अंतरावैयक्तिक संचार न हो तो किसी भी प्रकार का संचार संभव न हो पाये। अंतरावैयक्तिक संचार में तीन व्यक्तिगत अवयव– मनोवैज्ञानिक, भौतिक तथा शरीरतांत्रिक मिलकर संचार करते है।

अंतर–वैयक्तिक संचार

अंतर वैयक्तिक संचार वह है जिसमें व्यक्तियों का एक छोटा–सा समूह बेहद निकट से परस्पर संचार करें तथा जिसकी एक–दुसरे तक बेहद निकट से परस्पर संचार करे तथा जिनकी एक–दुसरे तक बेहद आसान पहुंच हो। अंतरवैयक्तिक संचार दो व्यक्तियों का परस्पर संचार है। एक व्यक्ति के दूसरे व्यक्ति से विचारों, मतो, भावनाओं आदि के आदान–प्रदान को अंतरवैयक्तिक संचार कहते है।

जब व्यक्तियों का एक समूह आमने–सामने विचार–विमर्श, गोष्ठी, भाषण, सभा वगैरह करके विचारों का आदान–प्रदान करें तो उसे समूह संचार कहते है। समूह–संचार कई सामाजिक परिवेशों में हो सकता है। जैसे–स्कूल कॉलेज, प्रशिक्षण केन्द्र, रंगमंच, चौपाल, कमेटी –हॉल आदि। समूह संचार में शामिल लोगों की संख्या के अनुसार व्यवहार एवं आकांक्षा में परिवर्तन होता है।

जन संचार

'मास' शब्द का प्रयोग रोमन कैथोलिक चर्च में केंद्रीय धार्मिक सेवा के यूखारिस्ट उत्सव के रूप में किया जाता है। यह शब्द लैटिन भाषा के MISSA से बना है। जनसंचार शब्द का प्रयोग 1930 के दशक में अंतिम दौर से प्रांरभ हुआ किस यंत्र का जनमाध्यम के जरिये एक संदेश का एक बहुत बड़े मिश्रित जनसमूह तक भेजा जाये, तो वह जनसंचार हैं जैसे – रेडियों, टीवी, अखबार पुस्तक। वस्तुतः यह जनसंचार–माध्यमों के जरियें समूह–संचार का ही एक विस्तार हैं। आम तौर पर जनसंचार तथा जनमाध्यम को एक ही समझा जाता हैं, लेकिन जनसंचार एक प्रक्रिया है, जबकि जनमाध्यम इसका साधन हैं। इसमें फीडबैक देर से, कमजोर एवं विकृत मिलता है।

जानोविच (1968) के अनुसार– जनसंचार ऐसी संस्थाओं एवं प्रतीकों का समुच्चय हैं, जिसमें विशेषज्ञों द्वारा तकनीकी उपकरणों, मसलन प्रेस, रेडियों, फिल्म वगैरह का इस्तेमाल करके कोई सांकेतिक संदेश, विशाल, बहुआयामी तथा दूर–दूर तक बिखरे श्रोताओं तक पहुंचाया जाता है।

बार्कर के अनुसार– जनसंचार श्रोताओं के लिए अपेक्षाकृत कम खर्च में पुनउत्पादन तथा वितरण के विभिन्न साधनों का इस्तेमाल करके किसी संदेश को व्यापक लोगों तक, दूर–दूर तक फैले हुए श्रोता तक रेडियों, टीवी., अखबार जैसे किसी चैनल द्वारा पहुंचाया जाता है।

हेड के अनुसार– जनसंचार के पांच पहलू हैः

व्यापक श्रोता – समूह,

विभिन्न प्रकार के श्रोता,

किसी संदेश की पुर्नरचना,

तीव्र वितरण,

उपभोक्ता के लिए सस्ता।

जनसंचार की विशेषताएं

1. अपेक्षाकृत व्यापक, विविध, बिखरे हुए श्रोता हेतु संदेश का सीधा प्रसारण।
2. संदेश का सार्वजानिक प्रसारण, जिसमें गोपनीयता संभव नही।
3. श्रोता तक पहुंचने का समय सामान्यतः निश्चित।
4. फीडबैक– अप्रत्यक्ष तथा देर से, बेहद कम।
5. प्रतिश्रोता के अनुपात में खर्च बेहद कम।
6. आम तौर पर एकतरफा संचार।
7. मीडिया इसमें अपनी जरूरत के मुताबिक श्रोता का चुनाव करता हैं, जैसे शिक्षितों के लिए अखबार।
8. श्रोता अपनी जरूरत के मुताबिक मीडिया का चुनाव करता है जैसे गरीब और अशिक्षित लोग रेडियों का।
9. इसमें संचार समाज के प्रति जिम्मेदार लोगों द्वारा किया गया है।
10. यह आधुनिक समाज की अनिवार्य जरूरत बन चुका है।
11. जनसंचार माध्यमों के स्तर से पता चल सकता हैं कि किसी देश या समाज के विकास का स्तर क्या है।

जनसंचार का विकासक्रम

जनसंचार का प्रारंभ अखबारों के उदय के साथ माना जाता हैं, लेकिन प्रिंट मीडिया के विकास से पहले परंपरागत रूपों से जनसंचार मौजूद था। व्यापक लोगों तक किसी सूचना को पहुंचाने के लिए ढोल–नगाड़े, डुगडुगी, भोंपू, तोप, चर्च की घंटियां, धुआं, आग तथा अन्य संकेतों का उपयोग होता था। इन रूपों में होने वाले जनसंचार में संकेतों की ऐसी व्यवस्था समाहित होती है, जिनकी व्यापक लोगों द्वारा एक समान रूप में व्याख्या संभव हो। संचार की आवश्यकताओं के विकास के साथ ही संचार के रूपों एवं उपकरणों का भी विकास होता गया। संदेश का कहानी, कविता, गीत, नृत्य, नाटक, इत्यादि रूपों मे प्रसारित किया जाने लगा।

1920 के दौर में रेडियो तथा 1940 के दौर में टेलीविजन के विकास ने इलेक्ट्रॉनिक जनसंचार–माध्यमों के रूप में मनुष्य को जबरदस्त उपकरण प्रदान किया। इससे पहले फिल्म के रूप में एक महत्वपूर्ण जनसंचार–माध्यम विकसित किया जा चुका था। टेलिग्राफ तथा वायरलेस के अविष्कार ने इलेक्ट्रानिक संचार की नयी–नयी संभावनाओं को जन्म दिया। रेडियों, टीवी तथा फिल्मों ने प्रिंट मीडिया की विभिन्न सीमाओं को लांघते हुए व्यापक लोगों तक प्रभावी एवं त्वरित ढंग से अपनी पहुंच बनाने तथा पूरी दुनिया में संदेश के प्रसार की अपनी क्षमताओं के जरिये जनसंचार को नया आयाम दिया। प्रिंट मीडिया तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में काफी फर्क है।

जन संचार– प्रक्रिया पर विविध दृष्टिकोण

जनसंचार एक अर्थगत प्रक्रिया है, जो चिह्नों और संकेतों पर आधारित है।

जनसंचार एक स्नायु–जैविक (Neuro-Biological) प्रक्रिया हैं। विभिन्न संकेतों व चिह्नों का अर्थ मनुष्य के स्नायुतंत्र में रिकार्ड होता है। मस्तिष्क का केंद्रीय नेटवर्क सिस्टम इस अर्थ के स्टोरेज तथा उसे वापस याद दिलाने में केंद्रीय भूमिका निभाता हैं।

जनसंचार एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है। मनुष्य सीखने के क्रम में विभिन्न संकेतो व चिह्नों का अर्थ ग्रहण करता है। ये अर्थ ही संदेश ग्रहण करने तथ प्रत्युत्तर देने में केंद्रीय भूमिका निभाते है।

जनसंचार एक सांस्कृतिक प्रक्रिया है, क्योंकि यह भाषा पर आधारित है, जबकि भाषा मनुष्य की सांस्कृतिक

परंपरा का अंग है।

जनसंचार एक सामाजिक प्रक्रिया है, क्योंकि संचार ही वह प्रमुख साधन है, जिससे मनुष्य समाज के साथ अंतक्रिया करता है।

जनसंचार के माध्यम

प्रिंट मीड़िया

समाचार पत्र एवं पत्रिकाएँ	फिल्म पत्रकारिता	फोटोग्राफी
स्क्रिप्ट लेखन	अनुवाद कार्य	पुस्तक प्रकाशन
प्रूफ रीडिंग	संपादन	कार्टुनिस्ट

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया

संचार क्रांति	रेडियो	रेडियो पत्रकारिता
टेलीविजन		

दूरदर्शन के कार्यक्षेत्र

टी.वी. तकनीशियन	स्पेशल इफेक्ट्स	समाचार
टी.वी. पत्रकारिता	मल्टीमीडिया	फिल्म निर्माता
विडियोग्राफी	एकंरिग	

जनमत

जनमत का अभिप्राय किसी समय विशेष में किसी भी मुद्दे पर नागरिक समाज के सुविचारित व सामूहिक मत से है। लोग विभिन्न समूहों से संबद्ध होते है तथा समूहों के अपने विचार होते है। विभिन्न समूहों के विचार आपस में टकराते हैं और उससे निकलने वाले किसी सर्वमान्य मत से जनमत का निर्माण होता है। इस प्रक्रिया में कोई समूह तार्किक बहसों के जरिये किसी निर्णय तक पहुंचता है तथा यह सचेत प्रयास के जरिये होता है। इसमें आम जनता की आकांक्षा भी शामिल होती है, भले ही वह स्पष्ट दिखायी न दे। जनमत के निर्माण तथा उसे प्रतिबिंबित करने में जनसंचार–माध्यमों की प्रमुख भूमिका निर्विवाद रूप में सामने आयी है। जनसंचार माध्यम किसी भी नागरिक तक दुनिया को संप्रेषित करते हैं तथा समाज की छवि प्रस्तुत करते है।

समाज में जिन विचारों का प्रवाह ज्यादा हो वह जनमत माना जाता है। जनमत निर्माण में समाज के तमाम लोगों की अपनी–अपनी भूमिका होती हैं। हर कोई अपने–अपने पूर्वाग्रह, विचार वगैहर लेकर आते है। इन सबकी अंतःक्रिया के बाद जनमत निर्माण होता है। जनमत निर्माण की प्रक्रिया में समाज के सभी लोग शामिल होते है, भले ही किसी की भूमिका कम हो या किसी की ज्यादा।

जागरूकता एवं जनसंचार

"नेक कामों से बनता है बेशक अपना मुकाम, जन्म से जहा में कोई देवता नहीं होता।" इन पंक्तियों से ये समझ में आता हैं कि समाज में नए परिवेश से परिचित होने की कला निराली है और जनमत की महत्वपूर्ण कड़ी जनसंचार है और सफलता के लिए गुणवत्ता अधिक आवश्यक है साथ ही संगठन, सहजता व स्थिरिता के लिए लोगों का जागरूक होना अत्यंत आवश्यकता है। भौतिकवादी समाज में लोगों को जागरूक करने हेतु जनसंचार एक ऐसा सशक्त माध्यम है जिससे समाज को नयी दिशा प्रदान की जा सकती है। चूंकि समाज व्यक्तियों से मिलकर बनता है, अतः व्यक्तियों या मनुष्यों में बेहतर समझ विकसित करने के लिए जनसंचार जैसे विषयों पर विचार करना अत्यंत आवश्यक है। समाज की संरचना व गति हेतु जनसंचार एक महत्वपूर्ण ईकाई के रूप में कार्य करता हैं। आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में कामयाबी हेतु लोकप्रियता तथा विश्वास एक महत्वपूर्ण तथ्य बन गया है। अतः मौजूदा परिवेश में जनसंचार द्वारा ही समाज व देश का निर्माण किया जा सकता है। इस हेतु विभिन्न प्रवृत्तियॉ महत्वपूर्ण हो सकती हैः–

1. देश दुनिया व समाज की घटनाओं का सार्थक तरीके से सत्य, सम्पूर्ण व बुद्धिमत्तपूर्ण चित्र प्रस्तुत किया जाये।

2. मीडिया आलोचना और विचारों के आदान–प्रदान का वास्तविक मंच बनें।
3. समाज के विभिन्न समूहों का प्रतिबिंब मिले।
4. नये विचारों व बुद्धिमत्तापूर्ण विचारों को सम्मान मिलें।
5. सामाजिक उद्देश्यों एवं मूल्यों की प्रस्तुती तथा स्पष्टीकरण या उन पर स्पष्ट समझ बनानें के प्रति गंभीर हों।
6. पहचान के लिए जनसंचार पर लोगों की निर्भरता।
7. नवाचारों तथा विकास की सूचना देना व उसे अंगीकार करना।
8. जनसंचार के प्रति चेतना विकसित करना।
9. समाज व दुनिया की घटनाओं स्थितियों की सूचना देना।
10. विभिन्न गतिविधियों को समन्वित करना।
11. प्राथमिकताएँ तय करना, आकांक्षाओं प्रति सचेत करना।
12. अंतर वैयक्तिक संचार व समाजिक संबंधों को विकसित करना।
13. लोकप्रिय प्रभावी विचार के अनुरूप अपने विचारों को बदलना।
14. अपने नैतिक आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को दृढ़ करना।
15. चमत्कार, उत्कृष्ट एवं अद्भूत चीजों को जानना।
16. देश दुनिया व संचार साधनों का उपयोग करना।
17. ऐसे साधनों को अनुकरण करना जिससे अपनी पहचान सत्यापित हो सके।
18. दूसरों के साथ अपने अनुभवों को बॉटना।
19. अपनी जिज्ञासाओं को मिटाना तथा सूचित होना।

निष्कर्ष

स्पष्टतया, किसी भी समाज जनसंचार वस्तुतः उस समाज के ही अनुकुल होता है। समाज के प्रभावी वर्ग के विचार और नैतिक मूल्य ही मीड़िया को भी नियंत्रित करते है इसलिए आज हम जनसंचार से किसी नये विशिष्ट मूल्य और भूमिका की अपेक्षा करते है।

समाज ने अपनी विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जिन संस्थाओं व्यवस्थाओं एवं साधनों का निर्माण क्रिया उनमें एक हैं, जनसंचार और फिर, चूंकि मीडिया समाज द्वारा निर्मित एक व्यवस्था, संस्था एवं साधन है लिहाजा इस पर नियंत्रण है इसलिए जनसंचार से किसी जादुई चिराग जैसी भूमिकाओं की अपेक्षा करने के बजाय व्यापक संदर्भों में ठोस वास्तविकताओं के धरातल पर चर्चा की जानी चाहिए।

नयी संचार तकनीक ने मनुष्य और समाज को किस तरह नये परिवर्तनों के समक्ष ला खड़ा किया हैं, और तकनीक किस तरह हमारे जीवन को नियंत्रित एवं प्रभावित कर रही है, इन प्रश्नों पर हमें पाश्चात्य शब्दावली से बचते हुए स्वयं अपनी दृष्टि विकसित करने पर जोर देना चाहिए।

संदर्भ सूची

1. चोपड़ा, लक्ष्मण, *जनसंचार का समाजशास्त्र,* आधार प्रकाशन, हरियाणा।
2. दुबे, श्यामाचरण, *संचार और विकास,* भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला, हिमाचल प्रदेश।
3. भानावत, संचीव, *पत्रकारिता का इतिहास एवं जनसंचार–माध्यम,* यूनिवर्सिटी पब्लिकेशस, जयपुर।
4. राजगढ़िया, विष्णु, *जनसंचार सिद्धांत और अनुप्रयोग,* राधाकृष्ण नई दिल्ली पटना इलाहाबाद।
5. सिंह ओमप्रकाश, *संचार के मूल सिद्धांत,* क्लासिक पब्लिशिंग कं., दिल्ली।

****